International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(5): 149-151

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(5): 149-151
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-07-2017
Accepted: 18-08-2017

Dr. Arun Kumar Porel
Assistant Professor,
Department of Sanskrit,
Syamsundar College,
Shyamsundar, Bardhaman,
West Bengal, India

Corresponding Author:
Dr. Arun Kumar Porel
Assistant Professor,
Department of Sanskrit,
Syamsundar College,
Shyamsundar, Bardhaman,
West Bengal, India

संस्कृत महाकाव्यों में समाज, धर्म एवं दर्शन

Dr. Arun Kumar Porel

सारांश
वर्तमान युग में समाज, धर्म और दर्शन की व्याख्या मनुष्य के लिए ग्राह्य होने के साथ–साथ भारतीयता के आत्म–गौरव की परिचायिका है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज, धर्म एवं दर्शन की विमुखता के कारण आस्था प्रश्न चिह्न के रूप में परिणत हो रही है परन्तु अन्तःकरण में विद्यमान मानव का दिव्यत्व उसे निःश्रेयस–सिद्धि हेतु प्रेरित करता है। यथा गीता में कहा है–

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस्सिद्धिः।
श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम्।
आत्मानः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।
यद्यदात्मनि चेच्छेत् तत्परेस्यापि चिन्तयेत्।
आत्मानः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

कुटशब्दः संस्कृत महाकाव्यों, समाज, धर्म, दर्शन

प्रस्तावना
आज के संक्रान्ति काल में मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए सम्यक् दिशा–निर्देशन के क्रम में महाकाव्य अधिक प्रासंगिक हैं। 21वीं सदी के संस्कृत कवि वर्तमान परिस्थितियों के प्रति कितना अधिक संवेदनशील हैं, इसकी झलक हमें उनके काव्य में स्पष्ट परिलक्षित होती है। मानव के निःश्रेयस तथा अभ्युदय की सिद्धि हेतु भारत भूमि पर अनादि काल से अनेक ऋषि–मुनि और दिव्यात्माओं का शरीर रूप में अवतरण हुआ है। स्वामी रामकृष्ण, स्वामी दयानन्द, श्रीसावरकर, श्रीभक्तफूलसिंह, महाराजा भीम, भगवान् श्रीराम, श्रीपरशुराम ऐसी दिव्यात्माएँ हैं, जिन्होंने विश्व स्तर पर भारतीय समाज, धर्म और दर्शन की पुनर्स्थापना की । श्रीसावरकर द्वारा की गई भारतीय समाज, धर्म और दर्शन की व्याख्या वर्तमान मनुष्य के लिए ग्राह्य होने के साथ–साथ भारतीयता के आत्मगौरव की परिचायिका भी है। भारतीय दर्शन रहस्यवाद और बुद्धिवाद का अद्भुत समन्वय है; निवृत्ति और प्रवृत्ति का समभाव है, भारतीय उच्चादर्शों की सार्वभौमिक कल्याणपरक दृष्टि है।कालिदास ने अपने अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में राजा का धर्म बताते हुए कहा है :–

भानुः सकृद्युक्ततुरंग एव रात्रिंदिवं गन्धवहः प्रयाति।
अवेक्ष्यदाह्यं न शमोऽस्ति वह्नेः षष्ठांशवृत्तेरपि धर्म एषः।।

कालिदास ने कहा है कि सूर्य, वायु एवं अग्नि कहीं से वेतन नहीं लेते, तब भी सूर्य बिना किसी विश्राम के संसार को प्रकासित करता है, वायु निरन्तर चलती रहती है तथा अग्नि भी जलाने योग्य वस्तु को जलाए बिना अर्थात् अपना धर्म पूरा किए बिना शांत नहीं बैठती है। परन्तु राजा तो प्रजा से कर के रूप में अपनी प्रजा से आय का छटा भाग वृत्ति के रूप में ग्रहण करता है, अतः उसका धर्म है कि वह प्रजा के पालनरूप कार्य में सदा लगा रहे।
वर्तमान वैज्ञानिक युग में मानव–हृदय अलौकिकता से विमुख होकर लौकिकता की ओर उन्मुख हो रहा है। वैज्ञानिकता की आँधी से प्रभावित मनुष्य स्वास्तित्व बोध को कल्पना क्षेत्र का विषय मानता है। परन्तु अन्तःकरण में विद्यमान मानव का दिव्यत्व उसे अभ्युदय तथा निःश्रेयस सिद्धिहेतु प्रेरित करता ही है। अतः आज के संक्रान्तिकाल में मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए सम्यक्–दिशा–निर्देशन के क्रम में अध्येय महाकाव्यों ने मेरी हृदय–चेतना को अत्यधिक प्रभावित किया है। इसलिए वर्तमान 12–13 वर्षों में रचित संस्कृत महाकाव्यों का विविध आयामों की दृष्टि से अध्ययन करना आवश्यक है। इधर कुछ वर्षों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक परिस्थितियाँ पूर्व से अधिक परिवर्तित होती`

जा रही हैं ऐसी स्थिति में संस्कृत काव्यकार क्या समाधान प्रस्तुत करते हैं, इसी जिज्ञासा से अध्येय महाकाव्यों में समाज, धर्म और दर्शन को अपने शोध प्रबन्ध का विषय बनाया। जिन महाकाव्यों का अध्ययन हेतु विषय बनाया है उनका नामकरण भले ही परम्परागत हो किन्तु उनमें वर्णित विषय आधुनिक संस्कृत महाकाव्य में दर्शन को भी अधिक महत्त्व दिया गया है।

संस्कृत में समाज, धर्म एवं दर्शन का स्थान

दर्शन शब्द का शाब्दिक अर्थ है – देखना या प्रत्यक्ष करना। संस्कृत में दर्शन का अर्थ है जिसके द्वारा ज्ञान अर्जित होता है। बुद्धि वृत्ति सम्पन्न मानव का कौतुहल प्रवर्णता में विश्व ब्रह्माण्ड विषय में विभिन्न प्रश्न जागृत होते हैं और उन प्रश्नों के उत्तर का अनुसंधान करके एक विशाल दर्शन शास्त्र का उद्भव हुआ है। वैदिक युग में जो दर्शन का सूत्रपात हुआ है आरण्यक साहित्य में वो विकसित होकर परिपूर्णता लाभ करता है। दर्शन शास्त्र में आकृष्ट विभिन्न ऋषियों के द्वारा विभिन्न प्रश्नों के समाधान में मानव के प्रति उपदेशमूलक वाणी का प्रचार हुआ है जैसे– 'आत्मानं विद्धि' अर्थात् आत्मा को जानना, 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' अर्थात् पार्थिव नश्वर वस्तु का त्याग के द्वारा भोग करने से ही आत्मा की यथार्थ उपलब्धि सम्भव है। आत्मा अर्थात् ब्रह्म का स्वरुपत्व उपलब्धि से ही प्रकृत आनंद है। उपनिषद् से अनुप्रेरित वेदान्त दर्शन इस सूत्र में प्लेटो की उक्ति– 'उपनिषद एक महासंगीत'।
अल्बर्ट आइन्स्टाइन की उक्ति 'दर्शन ही वैज्ञानिक गवेषणाओं की प्रेरणा है।

विशेष रूप से ध्यान दें

मानव जीवन में समस्याओं के समाधान में दो दिशा की आवश्यकता हैः–

1. दार्शनिक दृष्टिकोण और
2. विज्ञान

दर्शन का इतिहास में आचार्य शंकर का अपरिसीम अवदान अविस्मरणीय है। उन्होंने भारतीयों को दर्शन के माध्यम से आध्यात्मिकता और नैतिकता का पथ दिखाया है । पक्षपात के दुष्चक्र से मुक्त करके आत्मविश्वास के पथ पर चलना सिखाया है। उन्होंने मानव के अंदर ईश्वरत्व का जो स्थान है उसको खोजकर दिया है और समत्व भाव जागृत किया है। उनके दर्शन का दर्शित रूप है –

आत्म शक्ति ही श्रेष्ठतम लाभ का उपाय है।

आधुनिक कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने दार्शनिक चिंतन शक्ति के माध्यम से ही विश्व कवि का आसन लाभ प्राप्त किया है। दार्शनिक स्वतंत्र विचारधारा के सूत्र में दर्शन में दो पक्षों का सूत्रपात हुआ है– आस्तिक दर्शन और नास्तिक दर्शन। नास्तिक शब्द मूल रूप से आस्तिक शब्द से ही आया है। आस्तिक दार्शनिक जो वेद में विश्वास करता है और व्यक्ति के साथ–साथ वो परे को भी मानते हैं। जैसे – मीमांसा, वेदांत, सांख्य, योग, न्याय और वैशेषिक। और जो नास्तिक दार्शनिक हैं उनको वेद के प्रमाण में विश्वास नहीं है जैसे – चार्वाक, बौद्ध और जैन। इसके अलावा कालक्रम से दर्शन में स्वतंत्र मतभेद के लिए विभिन्न नामों पर विभिन्न शाखाओं की उत्पत्ति हुई है भारतीय दर्शन, पश्चिमी दर्शन इस तरह से भारतीय दर्शन में चार सोच के कदम मिलते हैं –

वेद का संहिता भाग में –	बहुदेववाद
उपनिषद भाग में –	सर्वेश्वरवाद
छः दर्शनों का युग में –	ज्ञानमार्ग में मुक्तिवाद
पुराण का युग में –	व्यक्ति रूप में ईश्वर को आधार करके भक्तिवाद

जहाँ दूसरे धर्म सीमित भौतिकता में जुटे हैं वहीं यह सार्वभौतिकता एवं आध्यात्मिकता से जुडा है। यहाँ कोई भी किसी भी सम्प्रदाय को मानने वाले या न मानने वाले हों वे सभी इसके अंग हैं। यही है मोक्ष का सही मार्ग सोच और गन्तव्य सनातन धर्म सबका था और आगे भी रहेगा।इसकी आत्मा आचार है :–

आचारो परमो धर्मः।

जंगली पंछी आगे बढता है तो धर्म से जुडता है और धर्म चेतना की पराकाष्ठा है मानव में धर्म की परिभाषा है चिरंतन सत्य, जहाँ दूसरे धर्मों का मूल केवल शान्ति है। वहीं भारतीय धर्म में सत् चित् और आनन्द– सच्चिदानन्द की कल्पना है। यहीं धर्म का मूल है। धर्म की परिभाषा हमारे दार्शनिकों, चिन्तकों ने अपने चिन्तन–मनन के परिणामस्वरूप भिन्न–भिन्न रूपों में प्रस्तुत की है। धर्म एक ऐसा व्यापक शब्द है जिससे किसी जाति या समाज का इतिहास और उसके जीवन की भूमिका प्रस्तुत करना सम्भव होता है। धारणातद् धर्मः इत्याहुः के अनुसार धर्म जीवन का मूलाधार है। धर्म की व्याख्या मनुस्मृति में इस प्रकार की गई हैः–

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः।
हृदयेनबीयनुज्ञातो यो धर्मस्तं निबोधत।।

अर्थात् धर्मात्मा, रागद्वेष से रहित विद्वानों के द्वारा सर्वदा सेवित और हृदय से जाना गया ही धर्म है। धर्म का यह सामान्य लक्षण है। ब्रह्मापुत्र मनु वेद को ही धर्म का मूल मानते हैंः–

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च।।

मनुस्मृतिकार ने तो चारों आश्रमों व चारों वर्णों के धर्म अलग–अलग बताए हैं। ब्रह्मचर्याश्रम में रहते हुए विद्याग्रहण करना ही धर्म बताया है। गृहस्थाश्रम में रहते हुए सन्तानोत्पत्ति कर वंशवृद्धि करना धर्म बताया है। गृहस्थाश्रम ही सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि सभी गृहस्थियों पर ही आश्रित रहते हैं। वानप्रस्थी का धर्म है कि वह परमात्मा का ध्यान करे। संन्यासी का धर्म है कि वा से अलग रहकर मोक्ष को प्राप्त करे। सभी के अलग–अलग धर्मों की व्यवस्था की।

सर्वस्यास्य तु सर्गस्य गुप्त्यर्थं स महाद्युतिः।
मुखबाहूरुजानां पृथक्कर्माण्यकल्पयत्।।

भाईचारा बिना किसी भेदभाव से सबके अभ्युदय और कल्याण की कामना करता है। इसकी आत्मा आचार है। आचार्य धर्म जहाँ दूसरे धर्म सीमित भौतिकता से जुडे हैं। वहीं यह सार्वभौमिकता एवं आध्यात्मिकता से जुडा है। यहाँ किसी भी सम्प्रदाय के मानने वाले हों या न मानने वाले हों वे सभी इसके अंग हैं यही है मोक्ष का सही मार्ग सोच और गन्तव्य, सनातन धर्म सबका था और आगे भी रहेगा।
युग बदले पूजा पद्धितियाँ पंथ चले और समाप्त हुए पर सोच आधार और मानक अपरिवर्तित रहे। इसी से समानता कालजयी है। पर यहाँ धर्म के नाम पर कभी किसी को कुछ भी थोपा नहीं गया सबके लिए सारे द्वार खुले हैं। इसी से बिना दबाव के सारे धर्म विकसित होकर अन्तः में स्वतः इसकी मूलधारा में जुडते गए। इन्हीं पंथों सम्प्रदायों के सिद्धान्त और उनके ऐतिहासिक विकास को प्रस्तुत करना इसका उद्देष्य है। यदि यह लक्ष्य पूरा हो सका तो यहीं हमारी सफलता है।
वेद भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के असीम ज्ञान के सागर हैं, जिनमें प्रत्येक भारतीय परम्परा का मूल अन्वेषित किया जा सकता है। तभी तो मराठी विद्वान् लक्ष्मणशास्त्री जोशी ने कहा है कि–सच बात तो यह है कि वेद वह सुप्रज्ञ तथा बहुप्रज्ञ माता है, जिसने

आज तक अनेकों धार्मिक कल्पनाओं को जन्म दिया है। इस सुपूती जननी से जनित एक–एक कल्पना में सर्वजनित एवं महत्त्वपूर्ण धर्म का निमार्ण करने तथा उसको ऊपर उठाने की अनूठी व अलौकिक शक्ति विद्यमान है।

ऋषियों–महर्षियों ने उस आत्मा का साक्षात्कार किया है। चिन्तनशील मानव ने ऐकान्तिक एवं आत्यान्तिक शान्ति के निमित जिस शास्त्र का उद्भावन किया है वही दर्शन शास्त्र है। इस प्रकार मूलरूप से कुल नौ दार्शनिक विचारधाराएँ या सम्प्रदाय देखने को मिलते हैं– सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व मिमांसा उत्तरमिमांसा, चार्वाक बौद्ध, और जैन। इनमें आस्तिक दर्शनों का वर्णन ब्रह्मवैवर्त पुराण में उपलब्ध होता है।

निष्कर्ष

भारतीय धर्म संस्कृति एवं दर्शन का पूर्ण चित्र उपस्थित करने वाले ग्रन्थ महाभारत और रामायण हैं महाभारत में भारतीय दर्शन संहिता का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता समाहित है। महाभारत की प्रतिष्ठा भारतीय संस्कृति व धर्म के प्रतिपादक ग्रन्थ के रूप में है।

सन्दर्भ

1. गीता
2. रामायण
3. महाभारत
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 5/3
5. मनुस्मृति 2/11
6. मनुस्मृति 2/6
7. भारतीय दर्शन